मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 5 मई 2012

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

दिल्ली में चार सप्ताह का पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	2
जहानाबाद पुस्तक उत्सव	3
गुड़गाँव पुस्तक उत्सव	3
कपूरथला, पंजाब में छह पंजाबी पुस्तकों का लोकार्पण, संगोष्ठी एवं कवि दरबार	4
आगामी पुस्तक मेले	4
गढ़दीवाला, पंजाब में 11 पंजाबी पुस्तकों का लोकार्पण, गोष्ठी एवं कवि दरबार	5
पुस्तक समीक्षा	6
अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	7
बैंकॉक अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	7
भारतीय बाल साहित्य पर संगोष्ठी	8

विश्व पुस्तक मेला अब हर साल

पुस्तकप्रेमियों, लेखकों, प्रकाशकों के लिए खुशखबरी! 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के उद्घाटन-अवसर पर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल की घोषणा के आलोक में नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित किया जाने वाला द्विवार्षिक नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला अब से सालाना आयोजन होगा। अब अगला, यानी **21वाँ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 6 से 10 फरवरी, 2013** की अवधि में आयोजित होगा।

विदित हो कि देश में पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने और प्रकाशन उद्योग के बढ़ते व्यवसाय को ध्यान में रखते हुए दो साल की जगह हर साल विश्व पुस्तक मेले के आयोजन की माँग की जा रही थी। विश्व के अनेक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले, यथा–फ्रैंकफर्ट, बीजिंग, मॉस्को, दुबई, शारजाह आदि भी सालाना आयोजन ही हैं।

अल्मोड़ा में पुस्तक दिवस

अंतरराष्ट्रीय पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस के उपलक्ष्य में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया एवं कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी विभाग, एस.एस.जे. परिसर अल्मोड़ा के जंतु विज्ञान विभाग के सभागार में 'वर्तमान दौर में पुस्तकों की प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में ट्रस्ट से प्रकाशित नौ पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। लोकार्पित पुस्तकें थीं : *अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियां,* (सं.) कृष्णदत्त पालीवाल; *पर्वत पर्वत बस्ती बस्ती,* चंडी प्रसाद भट्ट; *गोपाल चतुर्वेदी : संकलित व्यंग्य,* गोपाल चतुर्वेदी; *उत्तराखंड की लोककथाएँ,* हरिसुमन बिष्ट; *गंगाप्रसाद विमल : संकलित कहानियाँ,* गंगाप्रसाद विमल; *हृदयेश : संकलित कहानियाँ,* हृदयेश; *ओड़िसा की लोककथाएँ,* (सं.) महेंद्र कुमार मिश्र; *जीवन परिवर्तन का बेमिसाल मंच कल्याणी,* उषा भसीन; *रवीन्द्र कालिया : संकलित कहानियाँ,* रवीन्द्र कालिया।

इसके साथ ही स्थानीय महत्वपूर्ण रचनाकारों की पुस्तकें भी लोकार्पित की गईं जिनमें प्रमुख थीं : प्रो. दिवा भट्ट का उपन्यास 'अनिकेत', मोहन जोशी का कुमाऊंनी काव्य संग्रह 'धुधड़' तथा चंद्रकांत तिवारी का काव्य संकलन 'आशा अमरधन'।

पुस्तकों का लोकार्पण संयुक्त तौर पर प्रो. एच. एस. धामी, प्रो. देवसिंह पोखरिया, श्री मनोहर पुरी, डॉ. ललित किशोर मंडोरा, प्रो. शेखर जोशी और प्रो. एल.एस. सिंह ने किया।

लोकार्पित पुस्तकों एवं ट्रस्ट की गतिविधियों की जानकारी ट्रस्ट में हिंदी के सहायक संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने दी, साथ ही उन्होंने प्रतिभाशाली रचनाकारों को ट्रस्ट से जुड़ने का आह्वान भी किया।

संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता के तौर पर बोलते हुए डॉ. शेरसिंह बिष्ट ने कहा–"ज्ञानवर्धक पुस्तकें हमारी संपत्ति, हमारी संस्कृति का प्रामाणिक स्रोत हैं, पुस्तकों का इतिहास शताब्दियों पुराना है। वैदिक काल से हस्तलिखित पुस्तकों की यात्रा आज ई-बुक्स तक पहुँच गई है। सूचना क्रांति के इस युग में पुस्तकों को चुनौती भी मिल रही है; चुनौती द्वेषजनित नहीं होनी चाहिए। पुस्तकों की माँग भी बढ़ी है।" दूसरे वक्ता डॉ. शमशेर सिंह बिष्ट ने कहा कि पुस्तकों की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भारत में हर वर्ष 25 हजार पुस्तकों का प्रकाशन होता है। साथ ही,

अकेले भारत में 37 भाषाओं में पुस्तकें हर वर्ष प्रकाशित हो रही हैं। अंग्रेजी प्रकाशन में भारत तीसरे नंबर पर है।

'अमर उजाला' के पत्रकार व व्यंग्य लेखक श्री गौरव त्रिपाठी ने कहा–"बिना किताबों के कोई मोड़ नहीं पा सकता; किताबों का हमारे जीवन में बहुत बड़ा स्थान है।"

सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के निदेशक व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एच. एस. धामी ने कहा–"किताब की नेट पर जानकारी आधी-अधूरी होती है। जैसे शरीर के लिए व्यायाम की जरूरत है वैसे ही बुद्धि के लिए किताबों की जरूरत होती है।"

वरिष्ठ लेखक व पत्रकार श्री मनोहर पुरी ने कहा–"छपे हुए शब्द से हमारी सभ्यता प्रवहमान है। हमारी सभ्यता अक्षुण्ण है। पुस्तकें विस्तृत ज्ञान का स्रोत हैं। दार्शनिकों ने सामूहिक रूप से बुद्धि को पुस्तक माना है। सभ्यता के विकास के साथ पुस्तकों का संसार भी बदलता रहता है। पुस्तकें आने वाली पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के भीतर एक समन्वय का काम करती हैं और बौद्धिक संसार को विकसित करती हैं।" संगोष्ठी में प्रो. दिवा भट्ट, प्रो. देवसिंह पोखरिया, डॉ. जगत सिंह बिष्ट ने भी पुस्तक के संदर्भ में अपने वक्तव्य दिए।

शाम को सभागार में स्थानीय कवियों ने अपनी मंत्र-मुग्ध कर देने वाली रचनाओं से समा बाँध दिया और सही मायने में अंतरराष्ट्रीय पुस्तक दिवस को नया आयाम देने की कोशिश की।

अल्मोड़ा में ट्रस्ट का यह पहला साहित्यिक कार्यक्रम था जिसे बुद्धिजीवियों, पत्रकारों व स्थानीय आमंत्रित श्रोताओं ने पसंद किया।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान

दिल्ली में चार सप्ताह का पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

(2-28 जुलाई, 2012)

प्रकाशन व्यावसायिक बनने का एक सुनहरा अवसर! नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा उसके मुख्यालय नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 में 2 से 28 जुलाई, 2012 तक आयोजित किए जाने वाले चार सप्ताह के पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में नामांकन कराएँ।

पाठ्यक्रम की विशेषताएँ

देश के प्रमुख प्रकाशन संस्थानों के विख्यात व्यावसायिक पुस्तक प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेंगे। केस स्टडी, समूह चर्चा, कार्यशालाओं आदि के द्वारा प्रभावशाली एवं भागीदारीपूर्ण अंतर्क्रिया सुनिश्चित करें। दो महीनों का इंटर्नशिप एक अतिरिक्त लाभ के रूप में होगा। (पाठ्यक्रम शिक्षण का माध्यम अँग्रेजी होगा।)

न्यूनतम योग्यताएँ

आवेदक को स्नातक अवश्य होना चाहिए। प्रकाशन के क्षेत्र में उच्चतर योग्यताओं अथवा अनुभव वाले प्रत्याशियों को वरीयता दी जाएगी। अंतिम चयन हेतु प्राप्त आवेदनों की छँटाई समुचित रूप से गठित एक समिति द्वारा की जाएगी। इस संबंध में किसी भी प्रकार की पूछताछ नहीं की जा सकेगी।

पाठ्यक्रम शुल्क : ` 5000/- (नामांकन के समय देय); आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि : 10 जून, 2012।

आवेदन कैसे करें

सूचना फोल्डर एवं आवेदन प्रपत्र हेतु नकद 100/- रुपये नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 स्थित कार्यालय में भेजें। पाठ्यक्रम एवं आवेदन प्रपत्र के संबंध में अन्य जानकारी हेतु कृपया एनबीटी की वेबसाइट **www.nbtindia.org.in** देखें। समुचित रूप से भरे हुए प्रपत्र ट्रस्ट कार्यालय में अथवा ट्रस्ट कार्यालय में **सहायक निदेशक (प्रशिक्षण)** के पास अंतिम तिथि से पहले जमा किए जा सकते हैं।

किसी भी प्रकार की डाक प्राप्ति में हुए विलंब के लिए ने.बु.ट्र., इंडिया उत्तरदायी नहीं होगा।

किसी अन्य जानकारी के लिए कृपया श्री सुमित भट्टाचार्जी, सहायक निदेशक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक से 011-26707700 अथवा ई-मेल : sumitbhattacharjee23@gmail.com पर संपर्क करें।

विशेष ज्ञान प्राप्त करें :

संपादन
उत्पादन
विपणन
विक्रय प्रोन्नयन
ई-प्रकाशन
वित्त
प्रतिलिप्यधिकार
एवं अन्य संबंधित विषयों पर

जहानाबाद पुस्तक उत्सव

बिहार के जिला शहर जहानाबाद में विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस के अवसर पर ने.बु.ट्र. द्वारा 23 अप्रैल, 2012 से तीन दिनों तक एक पुस्तक उत्सव का आयोजन किया गया। शहर के इनडोर स्टेडियम में आयोजित इस पुस्तक उत्सव में पुस्तक प्रदर्शनी, परिचर्चा एवं लेखक से भेंट जैसे अनेक कार्यक्रम हुए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए सुप्रसिद्ध कवि प्रो. अरुण कमल ने शेक्सपियर के एक नाटक के नायक को उद्धृत करते हुए कहा कि किताबें ही लोगों की जमींदारी होनी चाहिए। उन्होंने उपहार में पुस्तकें देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, ''शादी-ब्याह के अवसर पर दिए जाने वाले उपहार के रूप में प्रत्येक व्यक्ति एक-एक किताब उपहार में दें।'' उन्होंने कहा कि ऐसा करने से पुस्तक पढ़ने की संस्कृति विकसित होगी जो समाज के लिए अच्छा है। जिलाधिकारी बालामुरुगन डी ने पुस्तक उत्सव का उद्घाटन करते हुए कहा कि पुस्तकें हर मनुष्य के ज्ञानवर्धन के लिए आवश्यक हैं, पर विद्यार्थियों की तो सबसे बड़ी मित्र पुस्तक ही होती है। जिले की आरक्षी अधीक्षक सुश्री हरप्रीत कौर ने कहा कि आज के युग में ज्ञान ही शक्ति है। उन्होंने कहा कि किताबें आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं। इस अवसर पर उर्दू लेखक प्रो. हुसैनुल हक व रक्षा अकादमी से सेवानिवृत्त प्रो. बी.पी.एन. सिन्हा ने भी अपने उद्बोधन किए। जिला साक्षरता समिति के समन्वयक संतोष श्रीवास्तव भी इस अवसर पर बोले।

पुस्तक उत्सव के दूसरे दिन स्कूली छात्रों ने पढ़ी गई किताबों पर अपने उद्गार व्यक्त किए। 'पुस्तकें जो मैंने पढ़ीं' विषय पर आयोजित परिचर्चा में बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। जिले के विभिन्न विद्यालयों से 35 प्रतिभागी इसमें शामिल हुए। विजेता बच्चों को नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से पुरस्कारस्वरूप पुस्तकें दी गईं।

अंतिम दिन लेखक से संवाद सत्र में उर्दू के चर्चित कथाकार एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त प्रो. अब्दुस्समद ने कहा कि साहित्य में पूरे हिंदुस्तान का दिल धड़कता है। साहित्य धर्म, भाषा, जाति, क्षेत्र और समाज को जोड़ने का काम करता है। साहित्य में सभी धर्मों का समावेश है। साहित्य को किसी धर्म से नहीं जोड़ना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि साहित्य में वैसी भाषा का प्रयोग हो जो आम बोलचाल की भाषा में प्रचलित हो। ऐसा साहित्य नहीं लिखा जाना चाहिए जो पाठकों के समझ से बाहर हो। संवाद सत्र का संचालन ट्रस्ट के संपादक डॉ. शम्स इकबाल ने किया। कार्यक्रम का समन्वय संतोष श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर कुछ अन्य वक्ताओं के भी उद्बोधन हुए।

विदित हो कि पुस्तक उत्सव के दौरान ट्रस्ट द्वारा लगाई गई पुस्तक प्रदर्शनी का अच्छा प्रतिभाव देखने को मिला। ट्रस्ट ने अपने प्रकाशन की हिंदी, अंग्रेजी एवं उर्दू पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई थी। इस प्रदर्शनी को देखने एवं पुस्तकें खरीदने गाँव-गाँव से लोग आए। लगभग 75,000/- रुपये मूल्य की पुस्तकों की बिक्री हुई।

गुड़गाँव पुस्तक उत्सव

दिल्ली से सटे हरियाणा राज्य के अंतर्गत गुड़गाँव में 20 से 23 अप्रैल, 2012 तक चार दिवसीय पुस्तक उत्सव का आयोजन किया गया। नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया तथा फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट के इस संयुक्त आयोजन में बड़ी संख्या में पुस्तकप्रेमी, छात्र, अध्यापक, विद्वान तथा पुस्तक से जुड़े लोग आए। गुड़गाँव स्थित फोर्टिस हॉस्पिटल परिसर, सेक्टर-44 में आयोजित इस उत्सव का उद्घाटन 20 अप्रैल को प्रसिद्ध लेखक तथा स्तंभकार श्री गुरचरण दास ने किया। इस मेले में हैचेट की पब्लिशिंग डायरेक्टर वत्सला कौल बनर्जी, बाल लेखिका पारो आनंद, फिल्म लेखक अद्वैत काला तथा ट्रस्ट-निदेशक एम.ए. सिकंदर समेत अनेक महत्वपूर्ण हस्तियों ने शिरकत की।

पुस्तक उत्सव के दौरान 'रीडिंग बुक्स इन डिजिटल एज' विषय पर एक परिचर्चा का भी आयोजन किया गया। वक्ताओं में वत्सला कौल बनर्जी, पारो आनंद, डॉ. समीर पारेख (मनोचिकित्सक) आदि शामिल थे। यह चर्चा मुख्य रूप से बढ़ते हुए डिजिटल वातावरण में पढ़ने की आदतों से संबंधित आदतों के बदलते रुझानों की पहचान पर केंद्रित थी। इसके अलावा मेले में पठन सत्र, पैनल चर्चाएँ और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन भी किया गया।

विदित हो कि इस पुस्तक उत्सव में ट्रस्ट की अंग्रेजी व हिंदी भाषाओं की पुस्तकें विक्रयार्थ प्रदर्शित की गई थीं। आसपास के कई स्कूलों के बच्चे इस पुस्तक उत्सव को देखने आए। लगभग 70 हजार रुपये मूल्य की पुस्तकों का विक्रय हुआ।

सेंट जेवियर्स स्कूल, नई दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी

नई दिल्ली स्थित सेंट जेवियर्स स्कूल में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने कंसोर्टियम ऑक्टेट, ब्रिटिश काउंसिल तथा देलही स्टेट बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स एसोसिएशन के सहयोग से एक पुस्तक प्रदर्शनी तथा संगोष्ठी का आयोजन किया। 20-21 अप्रैल, 2012 को आयोजित इस दो दिवसीय संगोष्ठी का विषय था—ऑगमेंटिंग लर्निंग इन द लर्निंग डिसएबिलिटीज (अधिगम अक्षमताओं में संवर्धन अधिगम)।

कपूरथला, पंजाब में छह पंजाबी पुस्तकों का लोकार्पण, संगोष्ठी एवं कवि दरबार

पुस्तकें लोकार्पित करते हुए, बाएँ से दाएँ–डॉ. बलदेव सिंह बद्दन, श्री के.एल. गर्ग, डॉ. केवल सिंह परवाना, श्रीमती बचिंत कौर, प्रो. कुलवंत सिंह औजला, श्री सिमर सदोष, श्री कुलदीप राय चौहान और डॉ. कंवर इकबाल

नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल, 2012 के अवसर पर सिरजणा केंद्र कपूरथला, अदबी शाम कपूरथला और लिटरेरी फोरम कपूरथला (पंजीकृत) के सहयोग से एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुरू में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित छह पंजाबी पुस्तकें लोकार्पित की गईं। पुस्तकें थीं : **बटुकेश्वर दत भगत सिंह दे सहयोगी** : लेखक–अनिल वर्मा, अनुवादिका–डॉ. जसविन्दर कौर बिंदरा; **हीरोसीमा दा दर्द** : लेखक–तोशी मारूकी, अनुवादक–डॉ. बलदेव सिंह बद्दन; **बिसर रहा पंजाबी बिरसा** : लेखक–श्री सुलखण सरहदी; **तुम्पा अते चीड़ी दे नन्हें बच्चे** : लेखक–स्वप्नराय चक्रवर्ती, अनुवादक–भूपिंदर सिंह आष्ट; **मोर दे खंभ** : लेखक–गिरिजा कुलश्रेष्ठ, अनुवादिका–द्रविंद्रप्रीत; **चंदा गिनती भूल गया** : लेखक–संजीव जायसवाल 'संजय', अनुवादक–पवन हरचंदपुरी। पुस्तकों पर पर्चा व्यंग्य लेखक श्री के.एल. गर्ग ने प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध कथा लेखिका श्रीमती बचिंत कौर ने की।

समागम के दूसरे भाग में 'पाठकों में पठन रुचि की कमी : समस्या और समाधान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हरीश जैन ने की। वक्ता थे–श्री करनैल सिंह निझर, डॉ. जागीर सिंह नूर, प्रो. सरदूल सिंह औजला, सिमर सदोष, डॉ. केवल सिंह परवाना, डॉ. अनुराग शर्मा, और डॉ. भूपिंदर कौर। डॉ. अनुराग शर्मा की राय थी कि क्षेत्रवादी सोच ने किसी क्षेत्रीय भाषा को विकसित होने का मौका नहीं दिया। अपना प्रभाव बनाने के लिए हम पंजाबी की बजाय अन्य भाषाएँ बोलकर गर्व महसूस करते हैं। उनकी राय थी कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने इतना नुकसान नहीं किया है। हमें देश के ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर पुस्तकों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। श्री करनैल सिंह निझर ने कहा कि पंजाबी भाषा को कोई भी राजनीतिक समर्थन नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि हमारी कोई भाषा और शिक्षा नीति ही नहीं है। देश के बँटवारे और पंजाबी प्रांत बनने से पाठकों का दायरा कम हुआ है। डॉ. जागीर सिंह नूर ने कहा कि हमारा यह नारा होना चाहिए 'हर पाठक के पास पुस्तक हो।' उन्होंने कहा कि पंजाब के 125 कॉलेजों में लाइब्रेरियन ही नहीं है। हमारी सरकार को इस ओर गंभीरता से विचार करना चाहिए। डॉ. भूपिंदर कौर ने कहा कि कॉलेजों में जो अध्यापक पढ़ा रहे हैं उनका पुस्तकों के साथ लगाव बहुत कम होता है। प्रो. सरदूल सिंह औजला ने कहा कि लेखकों की गुटबंदी और दैनिक समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में हो रहा रचनाओं का दोहराव पाठकों की कमी का एक कारण है। डॉ. केवल सिंह परवाना की राय थी कि प्राइमरी शिक्षा से ही पाठकों में पठन रुचि बढ़ाई जानी चाहिए। श्री सिमर सदोष ने कहा कि हमारे विद्वान साहित्य में जिन तत्वों की बात करते हैं वे तत्व हमारी पुस्तकों में मिलते ही नहीं। श्री हरीश जैन ने कहा कि हम प्रवचन सुनते हैं परंतु पढ़ना एक निरंतर क्रिया है। उन्होंने कहा कि पुस्तक समीक्षा की पाठक बढ़ाने में अहम भूमिका है परंतु 90 प्रतिशत समीक्षा पुस्तक की भूमिका और फ्लैप मैटर पढ़कर ही लिखी जाती है। उन्होंने कहा कि पंजाबी में साक्षरता से साहित्य और साहित्य से पुस्तकालय की यात्रा अभी शुरू ही नहीं हुई है। पुस्तकों में विषयों की विविधता की कमी भी एक कारण है। डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' ने कहा कि साहित्य उत्तम हो, मूल्य वाजिब हो और साहित्य आम लोगों तक पहुँचाया जाए तो पाठकों की कोई कमी नहीं है। उन्होंने पुस्तक मेलों, पुस्तक प्रदर्शनियों और अनुवाद साहित्य की भूमिका के बारे में महत्वपूर्ण बातें कही।

समागम के तीसरे भाग में कवि दरबार की अध्यक्षता श्री हरभजन सिंह हुंदल ने की। श्री संत संधू और श्री चंन जंड़िआलवी विशेष अतिथि के तौर पर शामिल हुए। कवि दरबार का संचालन डॉ. हरविंदर सिंह भंडाल ने किया। कवि थे–श्री हरभजन सिंह हुंदल, श्री संत संधू, प्रो. कुलवंत सिंह औजला, श्री राजेंद्र परदेसी, श्री गुरचरण तख्तर, डॉ. हरविंदर भंडाल, श्रीमती प्रकाश कौर संधू, श्री बलबीर सिंह परवाना, प्रो. जंग बहादुर सिंह घुम्मण, श्री चंन मोमी, श्री रूप दवुर्जी, डॉ. राममूर्ति, श्री निर्मल भंडाल, श्री कंवर इकबाल, श्री चंन जंड़िआलवी, श्री जोसन अदीब शायर, श्री गुरदीप गिल, श्री सुनील धीर, श्री कुमार आशु, श्री मुख्तार सिंह चंदी, श्री इबलीस, श्री दादर पंडोरवी, डॉ. हरभजन सिंह, श्री खजान सिंह, श्री बलबीर सिंह कल्हर, श्री लाल करतारपुरी और श्री जैलदार सिंह हसमुख।

श्रोताओं का एक दृश्य

कार्यक्रम के शुरू में डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' ने ट्रस्ट के कार्यक्रमों की जानकारी दी। प्रो. कुलवंत सिंह औजला ने स्वागती शब्द कहे। डॉ. केवल सिंह परवाना और श्री कंवल इकबाल ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस समागम में 150 के करीब साहित्यकारों और पुस्तक प्रेमियों ने भाग लिया। इस अवसर पर लोकगीत प्रकाशन और यूनीस्टार बुक्स, चंडीगढ़ की ओर से पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

आगामी पुस्तक मेले

शिमला पुस्तक मेला, शिमला	12 से 17 मई, 2012
श्रीनगर पुस्तक मेला, श्रीनगर	2 से 10 जून, 2012

गढ़दीवाला, पंजाब में 11 पंजाबी पुस्तकों का लोकार्पण, गोष्ठी एवं कवि दरबार

पुस्तकें लोकार्पित करते हुए, बाएँ से दाएँ–डॉ. मनिंदर सिंह कांग, श्री गुरिंदर सिंह कलसी, डॉ. बलदेव सिंह बद्दन, श्री हरीश जैन, डॉ. सतविन्दर सिंह ढिल्लों, डॉ. धर्मपाल सिंहल, श्री अमरीक डोगरा, श्री लाल सिंह, श्री सुलखण सरहदी, श्री भगवंत रसूलपुरी और श्री करनैल सिंह शेरगिल

नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से 30 मार्च, 2012 को खालसा कॉलेज, गढ़दीवाला, जिला होशियारपुर, में अदबी टकसाल गढ़दीवाला, साहित्य सभा, दसूहा गढ़दीवाला के सहयोग से एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस साहित्यिक कार्यक्रम में पंजाबी की 11 पुस्तकें लोकार्पित की गईं। पुस्तकें थीं : **बिसर रहा पंजाबी बिरसा** : लेखक–सुलखण सरहदी; **गुरु अमरदास जीवन ते वाणी** : लेखक–डॉ. हरबंस सिंह धीमान; **सुतंतरता अंदोलन अते भारती मुसलमान** : लेखक–शांति राय, अनुवादक : डॉ. नरेश; **बच्चे जिना ने कमाल कीता** : लेखक–तंगामणि, अनुवादक–जिंदर; **देश लई कुर्बान** : लेखक–आर.के. टंडन, अनुवादक–डॉ. मनिंदर सिंह कांग; **पीयू अते उस दे जादूई दोस्त** : लेखक–सौरत गुप्तो, अनुवादक–बलविंदर सिंह सोढी; **कच्च दा बक्सा (नीदरलैंड दीआं लोककथावां)** : लेखक–पुष्पिता अवस्थी, अनुवादक–बलविंदर सिंह सोढी; **सोना दीयां अक्खां** : लेखिका–उषा याधव, अनुवादक–प्रकाश सिंह गिल; **एक सी चीड़ी** : लेखिका–संतोष साहनी, अनुवादक–गुरिंदर सिंह कलसी; **नैनो टेक्नोलोजी अगली क्रांति** : लेखक–मोहन सुंदर राजन, अनुवादक–डॉ. कुलदीप सिंह धीर; **संत गुरु रविदास** : लेखक–डॉ. धर्मपाल सिंहल। पुस्तकों पर प्रसिद्ध कहानीकार भगवंत रसूलपुरी ने पर्चा प्रस्तुत किया।

साहित्यिक कार्यक्रम के दूसरे भाग में 'पाठकों में पठन रुचि की कमी : समस्या और समाधान' विषय पर संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. धर्मपाल सिंहल ने की। वक्ता थे–श्री हरीश जैन, डॉ. विक्रम सिंह घुम्मण, डॉ. रजनीश बहादुर, डॉ. मनिंदर सिंह कांग, प्रो. बलदेव सिंह बल्ली, प्रो. श्याम सिंह, श्री सिमर सदोष और श्री लाल सिंह। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. रजनीश बहादुर ने कहा कि बाजार में दोयम दर्जे के साहित्य की भरमार है, पुस्तकों की कीमत ज्यादा है और पुस्तक प्रचार की कमी के कारण पाठकों की पुस्तकों में दिलचस्पी कम हो रही है। डॉ. मनिंदर सिंह कांग ने कहा कि पंजाब में, 'कौमीअत के संकल्प' का अभाव और समकालीन राजसी शक्तियों की बेरुखी भी एक कारण है। श्री लाल सिंह ने कहा कि लेखक में सामाजिक प्रतिबद्धता की कमी है। श्री सुलखण सरहदी ने पंजाब की अफसरशाही की बेरुखी और चलंत किस्म की समीक्षा को एक कारण बताया। श्री केवल कलोटी ने कहा कि पंजाबी में ज्यादातर रचनाएँ ऐसी हैं जो 21वीं सदी के अनुकूल नहीं हैं। प्रो. श्याम सिंह और प्रो. बलदेव सिंह बल्ली ने पंजाबी मानसिकता के भीतर पसरी धार्मिकता की बहुतायत को इस समस्या का मूल कारण बताया। डॉ. विक्रम सिंह घुम्मण और श्री हरीश जैन ने कहा कि पंजाब में लाइब्रेरी एक्ट पूरी तरह लागू नहीं हुआ है। दैनिक समाचार पत्रों में विज्ञापन की दरें इतनी ज्यादा हैं कि आम प्रकाशक उसमें विज्ञापन नहीं दे सकता। बच्चों के माता-पिता और अध्यापक भी अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक नहीं हैं।

समागम के तीसरे भाग में कवि दरबार का आयोजन किया गया। कवि दरबार की अध्यक्षता शायर श्री परमिंदरजीत ने की। मुख्य अतिथि के तौर डॉ. करनैल सिंह शेरगिल (यू.के.) और विशेष मेहमान के तौर पर डॉ. सुहिंदरवीर और श्री बलवीर सिंह संघा शामिल हुए। कवि दरबार में भाग लेने वाले कवि थे–डॉ. सुरजीत जज, श्री सुलखण सरहदी, बीबा बलवंत, श्री बलवीर परवाना, श्री भगवान सिंह दीपक, श्री सुरजीत आर्टिस्ट, श्री जसविंदर महरम, डॉ. अमरजीत सिंह अनीस, श्री तरसेम सिंह सफरी, श्री अमरीक डोगरा, श्री नवतेज गढ़दीवाला, श्री पमदीप, श्री करनैल सिंह, श्री डी.आर. धवन, डॉ. जगविंदर योद्धा, श्री तेजेंद्र बावा, श्री मलविन्द्र, डॉ. विक्रमजीत, श्रीमती सुरेंद्रजीत कौर, प्रो. रणजीत माधोपुरी, श्री सुखदेव नत, श्री विशाल, श्री गुरिंदर सिंह कलसी, श्री सुखदेव कौर चमक, डॉ. सतवंत कौर, सुंदरपाल कौर, प्रकाश कौर संधू, जगदीश कौर वाडिया, श्री हरमनप्रीत सिंह, श्री इंदरजीत काजल और श्री राजेंद्र मार्शल।

इस अवसर पर लोकगीत प्रकाशन एवं यूनीस्टार बुक्स चंडीगढ़ की ओर से पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। समागम के शुरू में खालसा कॉलेज, गढ़दीवाला के प्रिंसिपल डॉ. सतविन्दर सिंह ढिल्लों ने स्वागती शब्द कहे। ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक डॉ. बद्दन ने ट्रस्ट की साहित्यिक गतिविधियों, प्रकाशनों, पुस्तक मेलों और पुस्तक प्रदर्शनियों के बारे में विस्तार सहित जानकारी दी। इस समागम में दो सौ के करीब लेखकों, बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और पुस्तकप्रेमियों ने भाग लिया।

श्रोताओं का दृश्य

पुस्तकप्रेमियों का पुस्तकों के प्रति आकर्षण

पुस्तक समीक्षा

शमशेर की आलोचना दृष्टि (आलोचना)
गजेंद्र पाठक; पृ. 96 ` 150
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
शमशेर की जन्मशती पर कवि शमशेर की आलोचकीय क्षमता को देखने-परखने की कोशिश है यह पुस्तक। एक युवा आलोचक की नजर से शमशेर के आलोचक रूप को देखना, अनुभूत करना एक दिलचस्प अनुभव होगा। दस अध्यायों में विभक्त इस आलोचना पुस्तक में आलोचना के नए प्रतिमान निर्मित होते हुए भी हम देख सकते हैं।

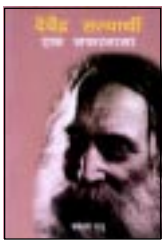

देवेंद्र सत्यार्थी : एक सफरनामा (जीवनी)
प्रकाश मनु; पृ. 294 ` 195
प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन, नई दिल्ली-03
देवेंद्र सत्यार्थी को चाहे लोकयात्री कहें या लोक-साधक, या फिर लोक यायावर अंततः 'लोक' से उनका गहरा संबंध साफ दिखता है। देश की माटी-पानी में छिपे लोकगीतों को किसी शंख-सीपी-सा बटोर लाना इनके ही बस की बात थी (लगभग तीन लाख लोकगीतों का संग्रह इन्होंने किया)। सत्यार्थी जी के आत्मीय रहे प्रकाश मनु ने सत्यार्थी जी की यह जीवनी लिखकर हिंदी जगत पर बड़ा उपकार किया है।

मुलक (उपन्यास)
दलपत चौहान, अनु. : डॉ. किरन सिंह
पृ. 144 ` 200
राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
अस्पृश्यता की समस्या भारतीय समाज की एक ऐसी समस्या है जिसका अंत अब तक दिखाई नहीं देता। कानूनी उपाय चाहे लाख हुए हों पर समाज के धरातल पर अस्पृश्यता के कैक्टस उगे ही रहे, खत्म नहीं हो सके। उपन्यास अतीत और वर्तमान की एक कड़ी के रूप में सामने आता है और इस सामाजिक अभिशाप पर विचार करता है।

वृद्ध जीवन की कहानियाँ (कहानी संग्रह)
संपा. : डॉ. शिवनारायण; पृ. 168 ` 250
साहित्य भारती, के-71, कृष्णनगर, दिल्ली-51
हमारे समाज में वृद्ध सर्वाधिक उपेक्षित हैं, एक तरह से निर्वासित। परिवार के बुजुर्गों के प्रति यह उपेक्षा भाव कालक्रम में विकसित हुआ और आज की बाजार संस्कृति ने इस भाव को भयावह बना दिया है। परिवार में जिसकी उपादेयता सर्वाधिक है यह विडंबना और विद्रूप ही है कि वे हमारे लिए अवांक्षित हो गए हैं। वृद्ध जीवन के विविध आयामों पर 15 कहानियों का उम्दा संकलन।

राष्ट्रहंता राजनीति (समसामयिक प्रश्न)
डॉ. ब्रह्मदत्त अवस्थी; पृ. 172 ` 500
नार्दर्न बुक सेंटर, 4221/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
स्वाधीनता के आसपास देश की राजनीति एक चिंतनशील और विचारपरक राजनीति थी। उस समय सद्भाव, समभाव और राष्ट्रभाव प्रबल था। कालक्रम में राजनीति विद्रूप होती गई, विरूप होती गई; आज राजनीति 'राष्ट्रहंता' हो गई है। स्वार्थ प्रबल है, परमार्थ केवल शब्द भर। नेताओं ने सारे देश को चरागाह मान लिया है और आम जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। आज की राजनीति पर विचार करती यह पुस्तक।

डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' का गद्य साहित्य (आलोचना)
डॉ. पुष्पा सक्सेना; पृ. 456 ` 900
निर्मल पब्लिकेशंस, ए-139, गली नं.-3, कबीर नगर, शाहदरा, दिल्ली-94
लेखक बच्चन की हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में गहरी पकड़ थी। कविता, कहानी, आलोचना, आत्मकथा, डायरी, संस्मरण, यात्रा साहित्य, पत्र साहित्य आदि सभी विधाओं में उन्होंने प्रभूत रचना की। डॉ. बच्चन के गद्य साहित्य विषय पर शोधोपाधि प्राप्त लेखिका ने बच्चन के गद्य रूप का सांगोपांग अध्ययन कर यह आलोचना पुस्तक लिखी है। बच्चन की कृतियों को समझने में मददगार होगी यह पुस्तक।

चित्रा मुद्गल : एक मूल्यांकन (आलोचना)
के. वनजा; पृ. 192 ` 300
सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाड़ा, एन. एस. मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
चित्रा मुद्गल हिंदी कथा साहित्य की आज की बेहद चर्चित एवं लोकप्रिय लेखिका हैं। आलोचक के. वनजा उनकी कहानियों, उपन्यासों के माध्यम से उनके कृतित्व के मूल्यांकन के साथ ही उनके व्यक्तित्व को भी पाठकों के सामने रखती हैं। एक रचनाकार पहले एक व्यक्ति होता है और यही 'व्यक्ति' उस रचनाकार की 'कृति' को निर्मित करता है। चित्रा मुद्गल की रचनाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है यह पुस्तक।

शिक्षा विडंबना (उपन्यास)
डॉ. बी. डी. बेलवाल; पृ. 184 ` 395
बसंती प्रकाशन, पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
आज शिक्षा की स्थिति कितनी खराब हो गई है यह किसी से छिपा नहीं है। शिक्षालय शिक्षा के केंद्र कम और बाजार का गुलाम अधिक हो गए हैं। उपन्यास में स्वयंसेवी संस्थाओं की आवश्यकता पर बल दिया गया है जिनके कर्मठ और समर्पित कर्मियों के माध्यम से एक क्रांति आ सके। धनलोलुप व्यक्ति और संस्थाओं से शिक्षातंत्र को मुक्त करने का संदेश भी है।

दीदार (ग़ज़ल संग्रह)
संपा. : डॉ. अपर्णा चतुर्वेदी 'प्रीता'; पृ. 248 ` 275
प्रीता प्रकाशन, ए-511, सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल के पास, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-17
ग़ज़ल विधा, यानी बड़ी-से-बड़ी और गूढ़ बातों को भी कम लफ़्ज़ों में कह देने का कौशल हो जहाँ। इस संग्रह में 82 ग़ज़लकारों के चुनिंदा ग़ज़लों का संग्रह किया गया है। इस संग्रह में ग़ज़ल की दुनिया के अनेक नाम छूटे हुए हैं, लेकिन संपादक की अपनी सीमाएँ भी होती हैं, मजबूरियाँ भी, और अपनी खास च्वाइस भी।

कविता का आँचल (कविता संग्रह)
गुरिंदर सिंह कलसी; पृ. 72 ` 125
कश्यप पब्लिकेशन, बी-48/यूजी-4, दिलशाद एक्सटेंशन-2, डीएलएफ, गाजियाबाद
कुल 52 कविताओं के इस संग्रह में कवि के विभिन्न भावबोधों की कविताएँ संग्रहीत हैं। इन कविताओं में निजी से लेकर समष्टि तक के अनुभवों के कई रूप हैं जिन्हें पढ़ना समय से एकाकार होने के समान है। इन कविताओं से गुजरना अपने परिवेश को गहरे देखने की तमीज भी पैदा करती है।

अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

22वां अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 29 मार्च से 2 अप्रैल, 2012 की अवधि में संपन्न हुआ। इस पुस्तक मेले में 54 देशों के 904 प्रदर्शकों ने भाग लिया। इनमें से लगभग 600 प्रदर्शक मध्य-पूर्व और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र से थे। यहाँ 33 भाषाओं की लगभग 50,000 पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। युनाइटेड किंग्डम इस वर्ष के मेले का मुख्य देश था।

भारतीय प्रतिभागियों में प्रकाशक, मुद्रक एवं डिजिटल सेवा प्रदाता शामिल थे। भारतीय दूतावास, सं. अरब अमीरात तथा कैपेक्सिल ने संयुक्त रूप से भारतीय प्रतिभागियों एवं महत्वपूर्ण विदेशी प्रतिभागियों के बीच संवाद कायम करने हेतु एक विमर्श का आयोजन किया। यह विमर्श इस मायने में उपयोगी और महत्वपूर्ण रहा कि इससे भविष्य की व्यापार संभावनाओं, विशेषकर बाल पुस्तकों के संदर्भ में, के रास्ते खुले। इस बार मेले में भागीदारों की संख्या में पिछले वर्ष की तुलना में कम-से-कम 10% बढ़ोतरी देखी गई। पुस्तक मेले में एक विशेष ई-जोन क्षेत्र डिजिटल प्रकाशकों एवं सेवा प्रदाताओं के लिए बनाया गया था, जिसमें भारतीय कंपनियों की भी भागीदारी थी।

पुस्तक मेले में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। इसके अलावा, एक सृजनात्मक कोना तथा हस्ताक्षर कोना नई पहल के रूप में थे। अरब प्रतिलिप्यधिकार प्रदर्शन भी मेले की एक खास विशेषता रही। गत वर्ष शुरू किया गया चित्रकार कोना भी विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। पुस्तक मेले में अरब एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय लेखकों के बीच आपसी विमर्श एवं पुस्तक हस्ताक्षर सत्र महत्वपूर्ण गतिविधियाँ रहीं। सत्र चर्चा, संगोष्ठियों, गोलमेज बैठकों एवं प्रस्तुतियों जैसे व्यावसायिक कार्यक्रमों ने अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन क्षेत्र में हो रहे बदलावों एवं अभिनव प्रयोगों से लोगों को परिचित कराया। वार्षिक शेख जायद पुस्तक पुरस्कार 29 मार्च को विजेताओं को प्रदान किए गए।

मेले में भाग लेने गए ट्रस्ट के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने मेले को बेहद सुरुचिपूर्ण आयोजन बताया और इसे सार्वजनिक-निजी भागीदारी का एक बेहतर उदाहरण कहा। श्री सिकंदर पुस्तक मेले के स्टेकहोल्डरों से मिले तथा भारत में उनके साथ सहयोग एवं समन्वय को लेकर चर्चा की। विदित हो कि अबूधाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला संस्कृति एवं धरोहर के लिए अबूधाबी प्राधिकार तथा फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला का एक संयुक्त उपक्रम था।

बैंकॉक अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

10वें बैंकॉक अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले और 40वें राष्ट्रीय पुस्तक मेले का उद्घाटन बैंकॉक के क्वीन सिरलिट नेशनल कन्वेंशन सेंटर में 29 मार्च, 2012 को राजकुमारी महा चक्री सिरिनधॉर्न द्वारा किया गया। इस पुस्तक मेले में 35 देशों के 660 भागीदारों ने भाग लिया। भारत की ओर से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने इस मेले में भागीदारी की। देश भर के 20 प्रकाशकों की हिंदी एवं अंग्रेजी में 250 से अधिक पुस्तकों को पुस्तक मेले में प्रदर्शित किया गया था। विदित हो कि पुस्तक मेला का आयोजन 'पुबात' (द पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स एसोसिएशन ऑफ थाईलैंड) द्वारा किया गया था। पुस्तक मेले में भारतीय पुस्तकों में वेद, उपनिषद, योग, मेडिकल एवं इंजीनियरिंग की पुस्तकों की विशेष माँग देखी गई। थाई लोगों ने भारतीय कॉमिक्स तथा बाल साहित्य के प्रति काफी दिलचस्पी दिखाई। पुस्तक मेला 8 अप्रैल तक चला।

पुस्तक मेले के एक भाग के रूप में संगोष्ठी, कार्यशालाएँ, चर्चा-विमर्श, पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम तथा बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया था। प्रतिलिप्यधिकार आदि पर चर्चा तथा आपसी विनिमय के लिए बैंकॉक पुस्तक मेले में एक विशेष मंच का निर्माण किया गया था।

पुस्तक मेले में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के स्टॉल ने थाई पुस्तकप्रेमियों को काफी आकर्षित किया। थाई लेखक, पुस्तकप्रेमी, प्रकाशक एवं विक्रेताओं के अलावा बैंकॉक स्थित भारतीय दूतावास के काउंसलर डॉ. जयदीप नायर भी ट्रस्ट के स्टॉल पर आए। बड़ी संख्या में बौद्ध विद्वान भी पहुँचे। विदित हो कि इस पुस्तक मेले में पुस्तकें केवल प्रदर्शनार्थ थीं, विक्रयार्थ नहीं। बहुत-से आगंतुक पुस्तक खरीदने को उत्सुक थे। भारत के संदर्भ में आगंतुक पुस्तिका पर एक पुस्तकप्रेमी की यह टिप्पणी उल्लेखनीय थी—'महान ज्ञान! महान देश!'

ट्रस्ट की ओर से सहायक संपादक (तेलुगु) डॉ. पथिपका मोहन एवं सहायक निदेशक श्री मयंक सुरोलिया इस पुस्तक मेले में प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/05/2012

भारतीय बाल साहित्य पर संगोष्ठी

''बाल साहित्य कोई खिलवाड़ नहीं है।...बाल साहित्य लिखा तो बहुत अधिक जा रहा है लेकिन यह क्या हो, कैसा हो इस पर भी विचार करना चाहिए।'' सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने यह कहा। वे 'भारतीय बाल साहित्य का समकालीन परिदृश्य : चुनौतियाँ एवं दिशा निर्धारण' विषय पर नेशनल बाल भवन, नई दिल्ली में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया समर्थित एवं लेखिका संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधन कर रहे थे। विदित हो कि 20 अप्रैल, 2012 से प्रारंभ चार दिवसीय पुस्तक मेले में दो दिन उक्त विषय पर संगोष्ठी को समर्पित रहा। श्री देवसरे ने आगे कहा, ''पुस्तक ज्ञान का सोपान है। ज्ञान के सोपान पर चढ़कर ही कोई शिखर पर जा सकता है।'' उन्होंने बच्चों तक पुस्तकें पहुँचाने का आह्वान भी किया। इस अवसर पर ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पुस्तक के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, ''अंतिम समय तक किताबें ही साथ देती हैं, बंगला, गाड़ी नहीं।'' उन्होंने कहा कि पुस्तक आत्म प्रेरणा देती है। उन्होंने हर राज्य में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र खोलने की योजना पर भी बात की। सबसे पहला केंद्र गोवा में खुलेगा। उन्होंने कहा कि यह पठन-आदत का 'हब' होगा।

लेखिका संघ की अध्यक्ष डॉ. मधु पंत ने स्वागत भाषण करते हुए इस चार दिवसीय पुस्तक मेले व द्वि दिवसीय संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, ''यह विक्रय का नहीं समर्पण का सम्मिलन है।'' उन्होंने नेशनल बुक ट्रस्ट के लेखिका संघ से जुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की। इसके लिए ट्रस्ट-निदेशक श्री सिकंदर के प्रयासों की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं वयोवृद्ध बाल साहित्यकार श्री देवसरे के बाल साहित्य में दिए गए योगदान की चर्चा करते हुए उन्होंने उन्हें 'बाल साहित्य के वटवृक्ष' के विशेषण से विभूषित किया। सुप्रसिद्ध बाल लेखिका एवं लेखिका संघ से जुड़ीं सुश्री सुरेखा पाणंदीकर ने अपने बीजभाषण में दुख व्यक्त किया कि आज के बच्चे अपना बालपन खो रहे हैं। उन्होंने बच्चों में पठन-रुचि जगाने और विकसित करने के लिए लेखकों को आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने पुस्तक की दुकान के घटते जाने पर चिंता व्यक्त की। ई-मीडिया की भूमिका पर उन्होंने कहा, ''ई-मीडिया ने बाल साहित्य को बड़ा प्रभावित किया है।'' उन्होंने बाल पुस्तकालय की आवश्यकता पर बल देते हुए यह सुझाव भी दिया कि पोस्ट ऑफिस की तरह हर क्षेत्र में बाल पुस्तकालय होने चाहिए। उन्होंने प्रकाशकों से बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण एवं रुचिवर्धक पुस्तकें छापने का भी आह्वान किया।

इस अवसर पर मधु पंत लिखित कविता 'किताबें कैसी होती हैं / किताबें सूरज होती हैं / किताबें पारस होती हैं / किताबें खिड़की होती हैं' की बच्चों द्वारा सुमधुर प्रस्तुति ने श्रोताओं को गहरे तक प्रभावित किया। उद्घाटन सत्र का समापन जल की महत्ता बताती नाट्य प्रस्तुति से हुआ। नेशनल बाल केंद्र के मेखला झा सभागार में आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. सुशील गुप्त ने किया।

बाद में 21 व 22 अप्रैल को कुल छह सत्रों एवं 23 अप्रैल को समापन सत्र में अनेक जाने-माने एवं सुपरिचित लेखकों एवं बाल साहित्यकारों ने विषय पर गहन-गंभीर चर्चा-विमर्श किया। कार्यक्रम में कई भाषाओं के विद्वान शामिल हुए। प्रकाश मनु का मानना था कि आज के बच्चों की मानसिकता को ध्यान में रखकर उनके लिए कुछ नया व सार्थक लिखा जाना चाहिए। दिनेश मिश्र ने कहा कि बाल साहित्य को जितना सम्मान मिलना चाहिए, उतना नहीं मिला। कुछ और मसालें जलाने का उन्होंने आह्वान किया। विमलेश कांति वर्मा ने कहा कि बच्चों में जिज्ञासा पैदा की जाए। लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने आज के बच्चों की नब्ज पहचाने जाने पर जोर दिया और बच्चों में वैज्ञानिक मानसिकता को बढ़ावा देने की बात कही। सुरेंद्र विक्रम ने कहा कि बच्चे आज नए-पुराने समाज के संक्रमण काल में जीने का संघर्ष कर रहे है। डॉ. वर्षा दास ने गुजराती बाल साहित्य पर कहा कि इसकी आत्मा और शरीर दोनों बदल गए हैं। गुलाम हैदर ने उर्दू में मौलिक लेखन के कमजोर होने पर दुख व्यक्त किया। लेखक-पाठक संवाद में बच्चों ने अनेक प्रश्न पूछे। समापन सत्र में टैगोर की कहानी का संगीतमय रूपांतर प्रस्तुत किया गया। रूपांतरकार थीं मधु पंत। चर्चा में प्रकाशक, चित्रकार, संपादक, शिक्षाविद्, अध्यापक, अभिभावक आदि भी शामिल हुए। इस अवसर पर खेल-खेल में गणित, खिलौने का विज्ञान, कठपुतली, अंगूठे द्वारा चित्रकारी, क्ले मॉडलिंग, एरोगैमी आदि गतिविधियाँ भी हुईं। संगोष्ठी का निष्कर्ष श्रीमती शशि जैन ने प्रस्तुत किया।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., शेड नं. 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. कॉम्प्लेक्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070